आरक्षण के जनक - छत्रपति शाहु महाराज

प्रा. सचिन कर्चे न्यू कॉलेज, कोल्हापुर.

राजर्षि शाहु महाराज मराठा के भोसले राजवंश के राजा रहे है। जिनका शासन काल 1894-1900 रहा है। और वे कोल्हापुर के भारतीय रियासतों के महाराजा (1900-1922) थे। उन्हे एक वास्तविक लोकतांत्रिक और समाज सुधारक माना जाता था। वे एक सच्चे दिल के और साधारण जीवन पध्दतियों को आपनाने वाले राजा थे। आज से लगभग 120 साल पहले अपने संस्था में 50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था लागू करने वाले शाहु महाराज समाज में समानता लाना चाहते थे। जो लोग आज भी पिछडे है, उन्हे समाज के मुख्य धारा में लाना और उसका विकास करना इनका प्रयास रहा है। छत्रपति शाहु महाराजने समाज में व्याप्त ब्राह्मणवादी वर्चस्व को तोडने के लिए कई अहम कदम उठाये वर्ण जाति व्यवस्था एवं इस पर आधारित भेदभाव को ध्वस्त करने में अपना पूरा जीवन लगा दिया। वे एक ऐसे राजा हुए जिन्होंने महात्मा फुले जी और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले जी के सपनों को साकार करने के लिए बडा कार्य किया। राजा बनते ही इन्होंने राज्य और समाज पर ब्राह्मणों के वर्चस्व को तोडने के लिए 26 जुलाई, 1902 में आरक्षण लागू किया। ताकि, पिछडे - दलित इस आरक्षण के माध्यम से लाभान्वित हो। यह आधुनिक भारत में जाति के आधार पर मिला पहला आरक्षण था। इस कारण शाहु महाराज जी आधुनिक आरक्षण के जनक कहलाए। परवर्ति काल में गरीबों, पिछडो दलितों को आरक्षण देने का काम करनेवाले डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने शाहु जी द्वारा लागु किये गए आरक्षण का ही विस्तार भारतीय संविधान में किया।

1894 मे जब शाहु महाराज राजा बने थे, उस समय कोल्हापुर राज्य के आधिकांश पदों पर चित्पावन ब्राह्मणों का कब्जा था। 1894 में जब शाहु महाराज ने राज्य की बागडोर संभाली थी, उस समय कोल्हापूर के सामान्य प्रशासन में कुल 71 पदों में से 59 पर पर ब्राहमण अधिकारी नियुक्त थे। इसी प्रकार लिपिक के 500 पदों में से मात्र 10 पर गैर ब्राह्मण थे। शाहू महाराज द्वारा पिछडी जातियों को 50 प्रतिशत आरक्षण उपलब्ध कराने के कारण 1911 में 100 पदों में से ब्राह्मण अधिकारीयों की संख्या अब केवल 35 रह गई थी।

हम सबको पता है कि, पेशवाओं के ब्राह्मणवादी शासन व्यवस्था के बाद महाराष्ट्र के धार्मिक जीवन के साथ-साथ राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन पर भी ब्राह्मणों का वर्चस्व और नियमन कायम हो गया था। इस ब्राह् मणवादी व्यवस्था को तोडने के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण उस युग की सबसे बडी क्रांति थी इस आरक्षण से ही हमारा बहुजन समाज समानता पा सकता है, आगे बढ सकता है, प्रगति कर सकता है, इसका अनुमान लगाकर ही उन्होंने आरक्षण का कदम बढाया। इस आरक्षण से ही आज हम वर्तमान समाज की मजबुत स्थिति को देख रहे है। क्योंकि संविधान में जो डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने आरक्षण का प्रबंध किया है, उसका स्त्रोत शाहु महाराज जी है। शाहु महाराज ही आधुनिक संविधान के आरक्षण के जनक है।

शाहू महाराज के आरक्षण विचार से समाज व्यवस्था में एक क्रांति आयी। समानता के बीज शाहू महाराज जी ने बोए। उनका यही विचार हजारों सालों की गुलामियों को तोडनेवाला साबित हुआ। आज तक उच्च-नीच का प्रकोप बनानेवाली व्यवस्था को शाहु महाराज ने सुरंग लगायी। वर्ण व्यवस्था में जकडी इस समाज व्यवस्था को ठीक कराना ही इस आरक्षण का मूल उद्देश्य रहा होगा। पेशवाई के चंगूल से इस समाज को बचाना ही इसका उद्देश्य रहा होगा। सचमुच आज जो हम आजादी की खुली साँस ले रहे है, उसके बीज अगर शाहु महाराज ने नही बोये होते तो आज भी हम गुलामी की बेडियों में जकडे हुए होते। विशिष्ट वर्ग की इस समाज व्यवस्था, को नष्ट करने का काम इनके आरक्षण ने किया। आज के दौर में जो कुछ समानता हमें दिखाई देती है, वह इस शाहु महाराज के आरक्षण की वजह से है।

9 जुलाई, 1917 को उन्होंने एक आदेश जारी किया कि, कोल्हापुर राज्य के सभी देवस्थानों की आय और संपत्ति पर राज्य का नियंत्रण होगा। इसके साथ ही उन्होंने मराठा, (पिछडी) जाति के पुजारियों की नियुक्ति का भी आदेश दिया। 1920 में शाहु महाराजाने पुजापाठ करने के लिए पुरोहितों के प्रशिक्षण के लिए विद्यालय खुलवाया। 1919 में शाहु जी ने एक आदेश जारी किया, जिससे अछुत समाज का कोई भी व्यक्ति अस्पताल आकर सन्मानपूर्वक इलाज करा सकता है। 1919 में ही उन्होंने एक और आदेश जारी किया कि, प्रायमरी, हायस्कूल और कॉलेजों में जाति के आधार पर छात्रों के साथ कोई भी भेदभाव न किया जाए। सरकारी विभागों में काम कर रहे दलितों के साथ समानता और शालिनता का बर्ताव करने का आदेश भी जारी किया। इससे साबित होता है कि शाहु महाराज सिर्फ आरक्षण देकर चुप नही बैठे उसके कार्यान्वयन पर भी बल दिया गया। बहुजन समाज को किसी भी प्रकार के उच्च-नीच की भावना से परे होकर समानता के धरातल पर लाने का महत्त्वपूर्ण काम शाहु जी के आरक्षण ने किया।

लगभग आज से 120 साल पहले छत्रपति शाहु महाराज ने आरक्षण की नींव नही डाली होती, तो आज के आधुनिक युग में भी बहुजनों की हालत गंभीर होती। वह आज भी समानता के लिए छटपटाता गिडगिडाता हुआ नजर आता। सचमुच छत्रपति शाहु महाराज का वह आरक्षण का कदम आज के आधुनिक युग का बीजवपन काल रहा। नही तो बहुजन समाज आज भी विशिष्ट वर्णव्यवस्था में बाँध दिया होता। पिछडो और दलितों के मुक्तिदाता कहे जानेवाले छत्रपति शाहु महाराज ने महात्मा जोतिराव फुले जी से जो प्रेरणा की मशाल जलाई जिसकी रोशनी आज के आधुनिक युग में भी दिखाई दे रही है।

बहुजन समाज का अगर उत्थान करना है, तो उसको शिक्षा और नोकरी में आरक्षण की जरुरत है, तभी वह सबकी बराबरी करके समानता पा सकता है, यह मूल विचार ध्यान में रखते हुए छत्रपति शाहु महाराज ने आरक्षण की नींव डाली। उसी नींव को पकडते हुए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने संविधान में आरक्षण का प्रावधान किया जिससे हम लोक अपनी अस्मिता को बनाए रखे हुए है। अपने विचारों को जीवित रखते हुए आत्मसन्मान और आत्मनिर्भरता से जी रहे है।

संदर्भ सूची:

1) डॉ.पवार जयसिंगराव ,राजर्षी शाहू छत्रपती जीवन व कार्य ,ताराराणी बुक सर्विसेस कोल्हापूर प्रथमावृत्ती ,२०१४
2) डॉ. विलास संगवे – राजर्षी शाहू महाराज : कार्य व प्रभाव
3) डॉ. नारायण कांबळे – राजर्षी शाहू : नव्या दिशा, नवे चिंतन
4) डॉ. धनंजय कीर – राजर्षी शाहू छत्रपती
5) लोकराज्य (सप्टेंबर २०१८)